रिकॉर्ड: बलना तेरी गली में. ... ओम शान्ती प्रातः क्लास 15-1-1967

सिवाय तुम ब्राह्मण बच्चों के गीत का अर्थ कोई समझ नहीं सकते। भल गीत बनाया है जैसे वेदशास्त्र आद भी बनाये हैं परन्तु जो कुछ पढ़ते हैं उसका अर्थ कोई भी समझ नहीं सकते हैं। इसलिये बाप कहते है मैं ब्रह्मा मुख द्वारा वेदों शास्त्रों का सार समझाता हूँ। वैसे ही इन गीतों का अर्थ भी कोई समझ नहीं सकते हैं। आत्मा जब शरीर से न्यारी हो जाती है तो दुनिया से सारा सम्बन्ध टूट जाता है। गीत भी कहते हैं अपने को आत्मा समझो, अशरीरी बन बाप को याद करते हैं तो यह दुनिया ही सारी खत्म हो जाती है।

यह शरीर इस पृथ्वी पर खड़ा है। आत्मा इस शरीर से निकल जाती है तो उस समय उसके लिये कोई स्टेज है नहीं। आत्मा नंगी बन जाती है। फिर जब शरीर में आती है तो स्टेज पर है। इतना जरूर है आत्मायें जो महतत्व में रहती हैं, यहाँ आती हैं शरीर में पार्ट बजाने। फिर शरीर छोड़ती है तो एक शरीर छोड़ दूसरे में जाकर प्रवेश करती है। वापस महतत्व में नहीं जाती है। उड़ कर दूसरे शरीर में जाती है।

यहाँ इस आकाश तत्व में ही उनको पार्ट बजाना है। मूलवतन में नहीं जाना है। जब शरीर छोड़ते हैं तो ना यह कर्म बन्धन ना ही वो कर्म बन्धन रहता है। शरीर से ही अलग हो जाती है ना। फिर वो दूसरे शरीर में गई तो फिर कर्मबन्धन शुरू होता है। जब तक शरीर में नहीं है तो वो नंगी है। यह बातें तुम्हारे सिवाय और कोई मनुष्य नहीं जानते हैं। बाप ने समझाया है सब मूर्ख और बेसमझ बन गये हैं।

परन्तु ऐसे कोई समझते थोड़ेही हैं कि हम मूर्खबुद्धि हैं। अपने को कितना अक्लमन्द समझते हैं। पीस-प्राइज़ देते रहते हैं। यह भी तुम ब्राह्मण कुल भूषण अच्छी रीत समझा सकते हो। वो तो जानते ही नहीं हैं कि पीस किसको कहा जाता है। कोई-2 तो महात्माओं पास जाते हैं कि मन को शान्ती कैसे हो? यह फिर कहते हैं वर्ल्ड में शान्ती कैसे हो? ऐसे नहीं कहेंगे कि निराकारी दुनिया में शान्ती कैसे हो। वो तो है ही शान्ती धाम। हम आत्मायें शान्ती धाम निर्वाण धाम में रहती हैं। परन्तु यह जो मन की शान्ती माँगते हैं वो जानते नहीं हैं कि शान्ती कहाँ मिलेगी। शान्ती धाम तो अपना घर है। यहाँ शान्ती कैसे मिल सकती है। हाँ: सतयुग में सुख शान्ती सम्पत्ति सब है। जिसकी स्थापना बाप करते हैं। यह भी अभी तुम बच्चे समझते हो सुख शान्ती सम्पत्ती भारत में ही है वो वर्सा था बाप का। और यह दुख अशान्ती कंगालपन यह वर्सा है रावण का। यह सब बातें बेहद का बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। तुम समझते हो हम आत्माओं को बाप कहते हैं। और कोई भी ऐसा समझ नहीं सकते कि हम आत्माओं को परमात्मा समझाते हैं। वो बाप परमधाम में रहने वाले नालेज फुल है। जो सुख धाम का हमको वर्सा देते हैं। वो हम आत्माओं को समझा रहे हैं। यह तुम जानते हो कि नालेज होती है आत्मा को। उनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। वो ज्ञान का सागर इस शरीर द्वारा वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी समझाते हैं। वर्ल्ड की आयु तो होनी चाहिये ना। वर्ल्ड तो है ही है। सिर्फ नया और पुराना होता है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया कहा जाता है। यह भी दुनिया को पता नहीं है कि न्यू वर्ल्ड, ओल्ड वर्ल्ड किसको कहा जाता है। तुम बच्चे जानते हो न्यू वर्ल्ड से ओल्ड वर्ल्ड होने में कितना समय लगता है। वो तो कुछ नहीं समझते हैं। कोई क्या कहते हैं कोई क्या कहते रहते हैं। नई दुनिया सतयुग को पुरानी दुनिया कलियुग को कहा जाता है। कलियुग के बाद सतयुग जरूर आना ही है। इसलिये कलियुग और सतयुग के संगम पर बाप को आना पड़ता है। यह भी तुम जानते हो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना, शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश कराते हैं। त्रिमूर्ती का अर्थ ही यह है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना... यह तो कॉमन है। परन्तु तुम बच्चे भी यह बातें भूल जाते हो। नहीं तो तुमको खुशी बहुत रहे। निरन्तर याद रहनी चाहिये ना। बाबा हमको अब नई दुनिया के लायक बना रहे हैं। भारतवासी ही लायक बनते हैं।

और कोई नहीं। हाँ:- जो और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं वो आ सकते हैं। फिर इसमें कनवर्ट हो जायेंगे। जैसे उसमें हुये थे। यह सारी नालेज तुम्हारी बुद्धि में है। मनुष्यों को समझाना है यह पुरानी दुनिया अब बदल रही है। महाभारत लड़ाई भी जरूर लगेगी ही। इस समय ही बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं जो

राजयोग सीखते हैं जो नई दुनिया में चले जाते हैं। प्रदर्शनी में भी यह समझाओ ... राज्य नई दुनिया में था। सतयुग नई दुनिया को कहा जाता है। उस समय राम राज्य भी नहीं था। सतयुग के बाद त्रेता होता है। बन फौरन दुनिया का पास हो जाता है। आधा कल्प दिन और आधा कल्प रात भी गाया हुआ है नां। यह सब बातें बच्चों की बुधी में रहनी चाहिये। नहीं तो यथार्थ रीत समझा नहीं सकेंगे। ऊँच त ऊँच है भगवान। फिर है ब्रह्मा विष्णु, शंकर। फिर आओ यहाँ:- मुख्य है जगत अम्बा जगत पिता। बाप आते ही हैं यहाँ ब्रह्मा के तन में। प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ है नां। ब्रह्मा द्वारा स्थापना सूक्ष्म वतन में तो नहीं होगी नां। यहाँ ही होती है। यह जो पतित है सो फिर पावन बनते सो फिर अव्यक्त बन जाते हैं। यह राज योग सीख कर फिर विष्णु का दो रूप बनते हैं। यह समझाना तो चाहिये नां। वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी समझनी तो चाहिये नां। मनुष्य ही समझेंगे। वर्ल्ड आलमाईटी ही वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी समझा सकते हैं। वो नालेज फुल सुप्रीम रुह है। यह बातें किसीको भी बुधी में नहीं है। उनको स्वर्ग में आने वाले ही नहीं है। सुनते ऐसे हैं जैसे बन्दर, समझा जाता है कि इनकी बुधी में कुछ भी बैठता नहीं है। परखने की भी बुधी चाहिये नां। कुछ बुधीमें बैठता है यां बांवला (तवाई) है। नब्ज देखनी होती है। एक अजमल खाँ नामी ग्रामी वैध हो कर गया है कहते है कि उसकी देखने से ही बिमारी का पता पड़ जाता था। अब तुम बच्चों को भी समझना चाहियेकि यह लायक है यां नालायक है। इतनी अच्छी बुधी भी उनकी होगी जो कि पूरा योग युक्त होंगे। जिसकी बाप से प्रीत बुधी होगी। सबकी तो नहीं है नां। एक दो के नाम रूप में लटक पड़ते हैं। बाप कहते है प्रीत तो मेरे साथ लगाओ नां। माया ऐसी है जो प्रीत रखने नहीं देती है। माया भी देखती है कि हमारा ग्राहक जाता है तो एकदम नाक से कान से पकड़ लेती है। फिर जब धोखा खाते है तो समझते हैं माया से धोखा खाया है। माया जीत ही जगत जीत बन सकेंगे। ऊँच पद पा सकेंगे। मेहनत ही सारी इसमें है। श्रीमत कहती है मामेकम याद करो तो तुम्हारी जो पतित बुधी है वो पावन श्रेष्ट बन जावेगी। बड़ा मुश्किल चलते है। इसमें संदेश एक ही है। अल्फ और बे। दो अक्षर भी याद नहीं कर सकते हैं। बाबा कहते अल्फ को याद करो फिर भी अपनी देह को, दूसरे की देह को याद करते रहते हैं। बाप कहते हैं देह को देखते हुये भी याद तुम मुझे करो। आत्मा को अभी तीसरा नेत्र मिला है। मुझे देखने समझने का। उससे काम लो। त्रिनेत्री बने हो तो त्रिकाल दर्शी भी बनते हो। नालेज धारण करना कोई मुश्किल नहीं है। बहुत ही अच्छे-2समझाते हैपरन्तु योग बिलकुल कम है। देहीअभिमानीपण बहुत कम है। थोड़ी बात में क्रोध, गुस्सा आ जाता है। गिरते ही रहते है। उठते है फिर गिरते है। आज उठे कल फिर गिर पड़ते है। देह अभिमान ही मुख्य है। फिर और विकार लोभ मोह आद में भी फँस पड़ते है। देह में भी मोह रहता है नां। माताओं में मोह जास्ती होता है। अब बाप इनसे छुड़ाते हैं। तुमको बेहद का बाप मिला है तो बन्दरों से मोह क्यों रखते हो? इस समय शक्ल, बात चीत, ही बन्दरों जैसी मिसल हो जाती है। बाप कहते है नष्टोमोहा बन जाओ। निरन्तर मुझे याद करो। पापों का बोझा सिर पर बहुत है। वो कैसे उतरे। परन्तु माया ऐसी है याद करने नहीं देगी। कितना भी माथा मारो। बड़े-2 बुधी को फिराय देती है। कितनी कोशिश करते है हम मोस्ट बिलवेड बाबा की महिमा करते रहते है। ऐसा बाबा अभी बापके पास आये कि आये। चलते फिरते याद भूल जाती है। और-2 तरफ बुधी चली जाती है। यह नम्बरवन में जाने वाला भी तो पुरुषार्थी है नां। बच्चों को बुधी में यह याद रहना चाहिये कि हम गाडली स्टुडेन्ट हैं। गीत में भी है भगवानो वाच तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। सिर्फ शिव के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। वास्तव में शिव बाबा की जयन्ती तो सारी दुनिया को मनानी चाहिये। शिव बाबा जो सबको दुःख: से लिबरेट कर, गाईड बन ले जाते है। यह तो सब मानते है कि वो लिबरेटर गाईड है। वो सबका पतित पावन बाप है। सबको शान्ती धाम सुख धाम में ले जाने वाला है।

उनकी जयन्ती क्यों नहीं मनाते हैं सारी दुनिया? भारत वासी ही नहीं मनाते हैं इसलिये ही भारत की यह बुरी गत हुई है। बुरी गति से ही मौत होना है। वो तो बाम्बस ऐसे बनाते हैं गैस निकले और खलास जैसे कि कोई फाल्स लगाया जाता है ना। ऐसे-2 बना रहे है। यह भी इनको बनाने ही हैं। कद होने सम्पूर्ण बुन है। जो-2 कल्प पहले हुआ था सो अब रिपीट होगा। इन मूसलों और नैचरल कैलेमिटीज से पुरानी दुनिया का विनाश हुआ था। सो अभी भी होगा। विनाश का समय जब होगा तो ड्रामा प्लान अनुसार ऐक्ट में आ ही जावेगा। ड्रामा विनाश जरूर करावेगा। नेचरल कैलेमिटीज आद सब होगी। रक्त की नदियाँ यहाँ बहेगी। यह तो पुराने दुश्मन हैं। सिवलवार में एक दो को मार डालते हैं। सिवल वार का बुरा अन्त होता है। आपस में कोई की बनती नही है। पलीयामेन्ट में पाकर भी लगाते है, गाली भी देते रहते है। तुम्हारे में भी थोड़े जानते है कि यह दुनिया अब बदल रही है। अब हम जाते है सुख धाम। सदैव ज्ञान के अतिइन्द्रिय सुख में रहना चाहिये। जितना याद में रहेगा उतना सुख बढ़ता जावेगा। छी-2 देह से नष्टोमोहा होते जावेगे। बाप सिर्फ कहते है अल्फ को याद करो तो बे बादशाही तुम्हारी है। सैकिंड में बादशाही। बादशाह का बच्चा हुआ तो गोया बादशाह बनाना। प्रिन्स बन फिर महाराजा जरूर बनेगा। तो बाप कहते है मुझे याद करते रहो और चक्र को याद करते रहो तो महाराजा बनेंगे। इस लिये गाया हुआ है सैकिंड में जीवन मुक्ति। सैकिंड में बैगर टू प्रिन्स। कितना अच्छा है। तो श्रीमत पर अच्छी रीत चलना चाहिये ना। कदम-2 पर राय लेनी होती है। ट्रस्टी बनना है। यह स्वयं भी ट्रस्टी बनते है। बच्चों को भी ट्रस्टी बनाते है। यह कुछ भी लेते हैं क्या? कहते है तुम ट्रस्टी हो सम्भालो। यह तो बड़ा बोझा हो गये ना तो इनकी माननी पड़े। ट्रस्टी बनें तो ममत्व हट जाता है। कहते भी है ईश्वर का ही सबकुछ दिया हुआ है। फिर कुछ नुकसान पड़ता है या कोई मर जाते है तो बिमार हो पड़ते है। मिलता है तो खुशी होती है। जबकि उनका ही दिया हुआ है तो दुख क्यों होता है? जबकि कहते हो ईश्वर का दिया हुआ है। तो फिर मर जाता है तो फिर रोने की क्या दरकार है। परन्तु माया कम नहीं है। इस समय बाप कहते है तुमने हमको बुलाया है कि इस पतित दुनिया में नहीं हम रहना चाहते है। हमको पावन दुनिया में ले चलो। निराकार आत्मा बाप को कहती है कि हमको साथ ले चलो। चाहे मार डालो, इस शरीर से लेलो। इनका अर्थ भी समझते नहीं है। पतित पावन आवेगी तो जरूर शरीर भी खत्म होगे ना। तब तो आत्माओं को ले जावेंगे।

बाप आते ही है नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश कराने। तो ऐसे बाप के साथ प्रीत बुद्धि होना चाहिये ना। एक से लव रहना चाहिये। उनको ही याद करना चाहिये। माया के तूफान तो आवेंगे। कर्म इन्द्रियों से कोई भी विकर्म नहीं करना है। वो बेकायदे हो जाते है। बाप कहते है मै आकर इस शरीर का आधार लेता हूँ। यह उनका शरीर है ना। तुमको याद बाप को करना है। इसलिये बच्चे गोद में आते है तो पूछता हूँ:- किसको भाकी पहनते हो? अगर शिव बाबा को याद नहीं करते हो तो पाप लग जावेगा। हमेशा समझो हम शिव बाबा से मिलते है। इस दादा द्वारा। पहले बाप की याद आनी चाहिये। शिव बाबा मिलता ही ब्रह्मा द्वारा है। और कोई द्वारा कभी मिल नहीं सकते है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते है। ब्रह्मा भी बाबा शिव भी बाबा। विष्णु और शंकर को बाबा नहीं कहेगें ना। शिव है निराकारी बाप। प्रजापिता ब्रह्मा है साकारी बाप। अभी तुम साकार द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो।

दादा इनमें प्रवेश करते है। दादा का वर्सा बाबा द्वारा हम लेते है। दादा है निराकार। बाबा है साकार। यह वण्डर फुल नई बातें है ना। त्रिमूर्ती दिखाते है। परन्तु समझते कुछ भी नहीं है। शिव को उड़ा दिया है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते की? कितनी अच्छी-2 बातें समझाई जाती है। खुशी रहनी चाहिये हम स्टूडेन्टस है। बाबा हमारा बाप भी है टीचर भी है सतगुरू भी है। हम आत्माओं को पावन बनाते हैं। नसीहत भी देते है। [illegible] ... नालेज इन सर्विस आफ इनाम कहा जाता है।